CHETANA
International Journal of Education
Impact Factor
SJIF-5.689
Peer Reviewed/
refereed Journal
ISSN-
Print-2231-3613,
Online-2455-8729

Prof.A.P.Sharma (25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th May 2020, Revised on 25th May 2020; Accepted 10th June 2020

शोध–पत्र

माओवादी दस्तावेज 'अर्बन पर्सपेक्टिव' के संदर्भ में 'शहरी नक्सल की अवधारणा' का मूल्यांकन

* डा समन्वय नंद
202, वैरागी विला, झारपडा, भुवनेश्वर
ओडिशा– *751006*
Email : samanwaya.nanda@gmail.com, Mob.-8249287233

मुख्य शब्द – *सर्वहारा, माओवादी, स्टेट, नक्सल आदि।*

प्रस्तावना

'सर्वहारा' की लड़ाई लड़ने का दावा करने वाले माओवादियों की अपनी एक विशेष प्रकार की रणनीति है । देश में निर्वाचित सरकारों को उखाड़ फेंकना उनका लक्ष्य है। इस लक्ष्य के लिए कार्य करने वाले माओवादी एक तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में पहले 'स्टेट' के खिलाफ बरगलाते हैं और उसके बाद उनका समर्थक हासिल करते हैं। धीरे-धीरे उन्ही समर्थकों मे से लड़ाई लड़ने के लिए लोग तैयार करते हैं । उन्हें हथियारों का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं और हमले में झोंक देते हैं। यह एक निश्चित प्रक्रिया होती है।

माओवादियों का एक वर्ग अपनी रणनीति के अनुसार जंगलों में छुपकर छापामार लडाई लडते हैं। वहीं दूसरा वर्ग जंगलों में न छुपकर शहरों में खुलेआम रहता है और स्वयं को बुद्धिजीवी बताकर तथाकथित क्रांति में अपना योगदान देता है। नक्सलवादी या माओवादियों की सहायता करने के आरोप में डॉ. विनायक सेन, कोबाड घांडी व दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यापक साई बाबा की गिरफ्तारी हुई थी। विनायक सेन व साई बाबा को न्यायालय ने दोषी भी करार दिया। अभी हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हत्या करने की साजिश रचने के आरोप में पांच लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। इनमें गौतम नौवलखा, सुधा भारद्वाज, वी. गोंजाल्वेस, अरुण परेरा व वारवरा राव। इन घटनाओं के सामने आने के बाद शहरी इलाकों में नक्सलवादियों का काम उनके काम करने के तरीके, उनका उद्देश्य, योजना व लक्ष्य के बारे चर्चा धीरे-धीरे बढ रही है। इसी दौरान अर्बन नक्सल शब्द का अधिक प्रचलन भी शुरू हुआ है। इससे पहले इस तरह के लोगों को मानवाधिकार कार्यकर्ता, वकील, पीडितों के लिए लडाई लडने वाले, आदि बताया जाता रहा है और ये लोग यही चोला पहने रहते हैं।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का एक दस्तावेज 'अर्बन पर्सपेक्टिव' के नाम से उपलब्ध है, जिसमें शहरी क्षेत्रों में नक्सलवादियों का काम कितना महत्वपूर्ण है? इस बारे में उल्लेख के साथ-साथ काम करने का तरीका क्या हो? और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिक्कतें क्या है? तथा उन्हें कैसे दूर किया जाए? इसका संपूर्ण विवरण है। इस दस्तावेज का अध्ययन करने के पश्चात उनके काम करने के तरीकों का एक स्पष्ट चित्र मिल जाता है।

इस दस्तावेज में माओ को उद्धृत कर कहा गया है कि "क्रांति का अंतिम उद्देश्य शहरों पर कब्जा करना है, जो शत्रु का मूल आधार है और इस उद्देश्य की प्राप्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक हमारा काम शहरों में पर्याप्त मात्रा में नही हो जाता है।"

दस्तावेज के अनुसार भारत की 27.8 प्रतिशत आबादी कस्बों व शहरों में रहती है। चीन में जब क्रांति हुई, तब वहां 10 प्रतिशत लोग शहरों में रहते थे। यानि भारत में क्रांति के लिए शहरी इलाकों की भूमिका चीन से अधिक होगी।

दस्तावेज के मुताबिक "एक शक्तिशाली शहरी क्रांतिकारी आंदोलन के बिना लगातार जारी इस जनयुद्ध में बाधाएं आ रही हैं, साथ ही शहरी लोगों की भागीदारी के बिना देशव्यापी विजय संभव नहीं है।"

अल्पकालिक नहीं दीर्घकालिक दृष्टिकोण

इस दस्तावेज में दीर्घकालिक दृष्टिकोण (लांग टर्म अप्रोच) का उल्लेख है। इसमें कहा गया है कि शहरी इलाकों में शत्रु काफी शक्तिशाली है तथा पार्टी का काम कमजोर होने के कारण शहरी इलाकों में आमने-सामने होकर शीघ्र परिणाम के बजाए दीर्घकालिक रणनीति पर काम करना होगा। शहरी इलाकों में पार्टी के लोगों को हमलावर न होकर रक्षात्मक ढंग से काम करना होगा। इसके लिए धैर्य के साथ काम करना होगा। सभी कामरेडों की पहचान को गुप्त रखने के लिए अधिक से अधिक सावधानी बरतनी होगी। भूमिगत ढांचे के बारे में पता न चले यह सुनिश्चित करना होगा, अन्यथा यह पूरी तरह ध्वस्त हो सकता है।

शहरी कार्य के प्रमुख उद्देश्य

इस दस्तावेज में शहरी इलाकों में कार्य को तीन मुख्य उद्देश्यों में विभाजित किया गया है। सबसे पहला व प्रमुख काम है कि आम जनता को इकट्ठा व संगठित कर पार्टी को उसके आधार पर तैयार करना। जन समुदाय, छात्र, श्रमिक, मध्यम वर्गीय नौकरीपेशा लोग व बुद्धिजीवियों को प्रेरित व संगठित करना। दूसरा, संयुक्त मोर्चा तैयार करना यानी मजदूरों को इकट्ठा कर शहरों में अन्य वर्गों के साथ गठबंधन स्थापित करना। किसान व श्रमिकों के बीच एकता स्थापित करना। किसानों व शहरी इलाकों में तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य है सामरिक कार्य। ग्रामीण क्षेत्रों में सामरिक कार्य करना मूल रूप से पीजीए व पीएलए का है। लेकिन ग्रामीण इलाकों में कैडरों को भेजना आदि काम शहरी आंदोलन का है। इसके अलावा शत्रु के रैंक में घुसपैठ व लाजिस्टिक सपोर्ट प्रदान करना भी इसमें शामिल है। सभी वर्गों को संगठित व प्रेरित कर व्यापक जनक्रांति की तैयारी करना व अंत में सशस्त्र क्रांति को अंजाम देना जैसा कि ग्रामीण क्षेत्रों में उनके सहयोगी नक्सलवादी चला रहे हैं। इसमें स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि पहला उद्देश्य यानी लोगों को संगठित व प्रेरित करना सबसे महत्वपूर्ण है। उसके बिना शेष दो उद्देश्यों की पूर्ति संभव नहीं है।

विभिन्न प्रकार के जन संगठन खडा करना

इस दस्तावेज में शहरी कार्य में विभिन्न प्रकार के जन संगठन तैयार करने के बारे में उल्लेख किया गया है।

1- गुप्त क्रांतिकारी जन संगठन।
2- खुला व आधा खुला क्रांतिकारी संगठन।
3- खुला कानूनी जन संगठन।

तीसरे प्रकार के संगठन का पार्टी के साथ सीधे तौर पर संबंध नहीं रहेगा।[i] तीसरे प्रकार के संगठन को भी तीन प्रकार से फ्रैक्शनल वर्क, पार्टी फार्मड कवर आर्गनाइजेशन व लीगल डेमोक्रेटिक आर्गनाइजेशन के रूप में विभाजित किया जा सकता है।

विशेषज्ञों के अनुसार शहरी नक्सलों का यह तीसरे प्रकार का संगठन देश की सुरक्षा के लिए अत्यंत खतरनाक है। इस प्रकार का कानूनी संगठन सरकार की नजरों से बच कर 'स्टेट' के खिलाफ धूर्ततापूर्ण व कपटी शिकायतों के जरिये लोगों का समर्थन हासिल करते हैं तथा संवैधानिक प्रभुत्व को खत्म करने का प्रयास करते हैं। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि पहले दो प्रकार के संगठनों की पहचान की जा सकती है तथा कानून के अनुसार उन्हें प्रतिबंधित भी किया जा सकता है लेकिन उक्त आखिरी संगठन के खिलाफ कार्रवाई करना संभव नहीं होता। क्योंकि इस प्रकार के संगठन या संगठनों को चलाने वाले व्यक्तियों पर कार्रवाई होने पर विभिन्न प्रकार के मानवाधिकार, दलित अधिकार व स्वयं को उत्पीडन विरोधी बताने वाले लोग सामने आकर हो-हल्ला मचाते रहते हैं और मानवाधिकारों के हनन का राग अलापते रहते हैं।

दस्तावेज के अनुसार विभिन्न प्रकार के संगठन जैसे ट्रेड यूनियन, मानवाधिकार संगठन, छात्र, महिला संगठन, जाति हटाओ संगठन, सांस्कृतिक संगठन, सांप्रदायिक सौहार्द संगठन आदि संगठनों का गठन कर इन कार्यों को शहरी इलाकों में अंजाम दिया जा रहा है। इसके अलावा स्पोर्ट्स क्लब, जिम्नासियम, भजन मंडल, गैर सरकारी कल्याण संगठन, जाति संगठन, अल्पसंख्यक संगठन के नाम पर भी शहरी इलाकों में नक्सली कार्य करना होगा।

शत्रु के शिविर में घुसपैठ

इस दस्तावेज में कहा गया है कि शहरी इलाकों में पार्टी का प्रमुख कार्य शत्रु के शिविर में घुसपैठ करना है। सामरिक बलों के साथ-साथ अर्ध-सामरिक बल, पुलिस तथा प्रशासनिक मशिनरी के उच्च स्तर पर कार्य करने वाले अधिकारियों में घुसपैठ करना अत्यंत जरुरी है। इन लोगों से शत्रु की गतिविधियों, गुप्त सूचना प्राप्त करना, क्रांति के लिए समर्थन जुटाना तथा शत्रु शिविर से आवश्यकता पड़ने पर विद्रोह कराना आदि कार्य किया जाएगा।[ii]

शहरी इलाकों से कैडर ग्रामीण इलाकों में भेजना

दस्तावेज के अनुसार जनयुद्ध व ग्रामीण इलाकों में आंदोलन के लिए शहरी कैडरों को ग्रामीण इलाकों में भेजना अत्यंत जरूरी है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए असंगठित क्षेत्र में कार्य का होना अत्यंत आवश्यक है। दस्तावेज के अनुसार रणनीतिक कारणों से प्रमुख उद्योगों में पार्टी का कार्य निहायती जरूरी है। असंगठित क्षेत्र में काम को गति देना जरूरी है क्योंकि यहां से कैडर निकाल कर ग्रामीण इलाकों में आंदोलन के लिए भेजा जा सकता है।

सशस्त्र युद्ध के लिए लाजिस्टिक सपोर्ट प्रदान करना

दस्तावेज में कहा गया है कि शत्रु समस्त प्रकार का लाजिस्टिक सपोर्ट शहरों से प्राप्त करता है। पीपुल्स आर्मी ग्रामीण इलाकों से तथा ग्रामीण जनता पर ही अपनी आवश्यकता के लिए निर्भर करती है । लेकिन कुछ महत्वपूर्ण चीजों के लिए शहरी क्षेत्रों से सहयोग की आवश्यकता रहती है। इसलिए शहरी क्षेत्रों में पार्टी की शक्ति को ध्यान में रखकर ग्रामीण क्षेत्रों में नक्सलवादियों को सहायता करने का उल्लेख इसमें है। जो चीजें केवल शहरों में उपलब्ध है। उदाहरणतः हथियार व गोला-बारूद उपलब्ध कराना, मेडिकल की सुविधा आदि उपलब्ध कराना है।[iii] गौरतलब रहे कि वर्नन गंसाल्वेस को पिछले दिनों नागपुर के एक सेशन कोर्ट ने हथियार रखने के आरोप में दोषी पाया था। यह संकेत है इस बात का कि गंसाल्वेस भाकपा (माओवादी) पार्टी के अर्बन पर्सेपेक्टिव के अनुसार कार्य कर रहे थे।

इसी तरह कई बार पुलिस के साथ मुठभेड़ के दौरान ग्रामीण कैडर घायल हो जाते हैं, या फिर कई बार कैडर बीमार पड जाते हैं। उनका इलाज उनके कार्यक्षेत्र या जंगलों में संभव नहीं होता। ऐसे में शहरी नक्सलियों की जिम्मेदारी बन जाती है उन्हें मेडिकल सुविधा उपलब्ध कराना। इसके लिए समर्थक डाक्टरों का नेटवर्क खड़ा करना तथा ग्रामीण इलाकों में घायल या बीमार नक्सली

को शहरों के अस्पतालों में चिकित्सा की व्यवस्था करना आदि कार्य शहर में रहने वाले कैडरों को करना होगा। इसी तरह युद्ध, हथियार, संचार व अन्य उपकरणों की मरम्मत के लिए भी शहर से ही सहयोग देना होगा। इसके लिए शहरों में कैडर तैयार करना, उन्हें ग्रामीण इलाकों में भेजकर जनयुद्ध लड़ रहे कैडरों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करनी होगी।

अर्बन नक्सल अपना काम पूरी तरह से मानवाधिकार व वंचित लोगों के अधिकारों की आड़ में करते हैं। वे भारत के संविधान में विश्वास नहीं रखते लेकिन संविधान से प्राप्त हर अधिकार का बखूबी इस्तेमाल कर भारत को ही समाप्त करने के लिए लगे रहते हैं।

अर्बन नक्सल का इकोसिस्टम बड़ा जबरदस्त है। इसे इस घटना से समझा जा सकता है। छत्तीसगढ में एक अर्बन नक्सली डॉ. विनायक सेन पर माओवादियों का साथ देने तथा देश के खिलाफ युद्ध छेड़ने का आरोप था। न्यायालय में मामला चला तथा न्यायालय ने डॉ. सेन को दोषी करार दिया। शहरी नक्सलों का नेटवर्क इतना प्रभावी है कि देश के अनेक नामी-गिरामी लोग तत्काल उन्हें रिहा करने की मांग को लेकर कैंडल मार्च निकालने लगे। लेकिन जब बात नहीं बनी तो 12 देशों के 40 नोबेल विजेता, एक पिटिशन पर हस्ताक्षर कर विनायक सेन को रिहा करने की मांग की। अंत में उन्हें रिहा करना पड़ा। हाल ही की एक घटना भी अर्बन नक्सलियों के मजबूत इकोसिस्टम को प्रमाणित करती है ।

भारत के आमजन को अर्बन नक्सलियों के भारत को समाप्त करने की भंयकर योजना के बारे में सामान्य जानकारी तक नहीं है। ये लोग मीडिया व अन्य उपकरणों के जरिये मानवाधिकार व वंचित अधिकारों के नाम पर मसीहा की छवि बनाए हुए हैं। यह छवि तब टूटेगी जब भारत की आम जनता इस सच्चाई से अवगत होगी। इसलिए यह आवश्यक है कि अर्बन नक्सलियों के बारे में लोगों में जागरूकता लायी जाए।

---

[i] https://www.satp.org/satporgtp/countries/india/maoist/documents/papers/Urbanperspective.htm 3.3.1

[ii] https://www.satp.org/satporgtp/countries/india/maoist/documents/papers/Urbanperspective.htm3.5.2.2

[iii] https://www.satp.org/satporgtp/countries/india/maoist/documents/papers/Urbanperspective.htm3.5.2.4

*** Corresponding Author:**
डा समन्वय नंद
202, वैरागी विला, झारपडा, भुवनेश्वर, ओडिशा-751006
Email : samanwaya.nanda@gmail.com, Mob.-8249287233